

काला मोतियाबिंद

भारत में लगभग सवा करोड़ से ज्यादा लोग काला मोतियाबिंद यानी ग्लूकोमा से प्रभावित है

दुनियां में साढ़े छह करोड़ लोग आंखों की बीमारी ग्लूकोमा यानी काला मोतियाबिंद से लड़ रहे हैं। इनमें से लगभग सवा करोड़ लोग भारत में हैं।

ग्लूकोमा सोसायटी ऑफ इंडिया की माने तो भारत में जितने भी लोग अपनी दृष्टि खोते हैं, उनमें से 12 प्रतिशत ग्लूकोमा से प्रभावित होते हैं।

ग्लूकोमा, जिसे हम काला मोतियाबिंद के नाम से भी जानते हैं आपको स्थायी रूप से दृष्टिहीन बनाने की क्षमता रखता है। ग्लूकोमा आंखों की एक बीमारी है जिसका आसानी से पता नहीं चलता और जब पता चलता है, तब बहुत देर हो चुकी होती है। इसी कारण इसको चुपके से आंखों की रोशनी चुराने वाला भी कहा जाता है। इससे बचने का एक ही उपाय है कि इसकी पहचान जल्दी से जल्दी कर ली जाए। 40 वर्ष की आयु पार चुके लोगों के लिए यह ज्यादा खतरनाक है।

ग्लूकोमा यानी काला मोतियाबिंद होता क्या है?

आंखों में एक्वेस ह्यूमर नाम का एक तरल पदार्थ होता है जो लगातार बनता और बहता रहता है, जिसका काम आंखों को सही आकार देने के साथ-साथ उसका पोषण करना होता है। इस तरल पदार्थ को लेंस के चारों ओर स्थित सीलियरी टिश्यू लगातार बनाते रहते हैं। यह तरल पदार्थ पुतलियों से होता हुआ आंखों के भीतरी हिस्से में जाता है। स्वस्थ आंखों के लिए जरूरी होता है कि यह तरल पदार्थ लगातार बनता और बहता रहे। इसके बनने और बहने के संतुलन को इंद्रोक्युलर प्रेशर कहते हैं। कभी-कभी बहाव नलिकाओं का मार्ग बंद हो जाता है और इसका बहना रूक

जाता है, लेकिन सीलियरी ऊतक इसे लगातार बनाते ही जाते हैं जिसकी वजह से ऑप्टिक नर्व के ऊपर इसका दबाव बढ़ जाता है। इसके प्रभाव से कभी-कभी प्रभावित व्यक्ति स्थायी रूप से दृष्टिहीन भी हो जाते हैं।

ग्लूकोमा की चपेट में आने वाले व्यक्ति के चश्मे का पावर बहुत जल्दी-जल्दी बदलता है। आंखों की रोशनी लगातार कम होती जाती है और अंधेरे कमरे में देखना बहुत मुश्किल होता है। प्रभावित व्यक्ति को

लक्षण

- आंखों के सामने छोटे-छोटे बिंदु और रंगीन धब्बे दिखाई देना।
- आंखों के आगे इंद्रधनुष जैसी रंगीन रोशनी का घेरा दिखाई देना।
- चक्कर आना और मितली आना।
- आंखों में तेज दर्द होना।
- साइड विजन को नुकसान होना और बाकी विजन का ठीक रहना।

सिरदर्द होता है, रोशनी के चारों तरफ सतरंगी रेखा दिखने लगती है।

ग्लूकोमा / काला मोतियाबिंद के प्रकार

प्राइमरी ओपन एंगल या क्रोनिक ग्लूकोमा में देखने की क्षमता लगातार घटती जाती है, हालांकि रोगी को कोई दर्द नहीं होता। क्लोज्ड एंगल या एक्यूट ग्लूकोमा होने पर, आंखों से द्रव का निकलना एकदम से रुक जाता है जिससे दबाव इतना बढ़ जाता है कि लक्षण तुरंत दिखने लगते हैं। इस प्रकार के ग्लूकोमा के लक्षणों की पहचान आसानी से की जा सकती है। कंजीनियल ग्लूकोमा में बच्चे को जन्म से ग्लूकोमा होता है।

क्या काला मोतियाबिंद ठीक हो सकता है?

काला मोतियाबिंद से आंखों को पहुंचे नुकसान की भरपाई संभव नहीं है क्योंकि इसका ऑप्टिक नर्व पर स्थायी असर होता है। लेकिन यदि सही समय पर इलाज मिले तो ऑप्टिक नर्व को होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है और किसी किसी केस में रोका भी जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि प्रभावित व्यक्ति को इलाज किसी अच्छे नेत्र विशेषज्ञ की देखरेख नियमित रूप से हो। यह जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है।

कौन प्रभावित हो सकता है काला मोतियाबिंद (ग्लूकोमा) से

- परिवार में किसी सदस्य को काला मोतियाबिंद हो या पूर्व में रहा हो
- मधुमेह यानी डायबिटीज से प्रभावित है
- हाई माइनस व प्लस नम्बर का चश्मा पहनते हैं
- हाइपरटेंशन है
- आंखों की सर्जरी हो चुकी है
- थायराइड रोग से पीड़ित है
- मोतियाबिंद (सफ़ेद मोतियाबिंद, कैटेरेक्ट) से काफी लम्बे समय से प्रभावित है
- कभी आँख में चोट लगी हो
- लम्बे समय तक स्टेरोइड युक्त आई ड्रॉप प्रयोग किया है या कर रहे हैं

